JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय टेलीविजन पर प्रसारित ऐतिहासिक धारावाहिकों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन

डॉ. सेवा सिंह बाजवा
प्रोफेसर,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा
nachizbajwa@gmail.com
पल्लवी लाकड़ा
शोधार्थी,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा
pallavilakra1522@gmail.com

सारांश:

टेलीविजन एक दृश्य श्रव्य माध्यम है जिसके द्वारा दर्शकों को विभिन्न प्रकार की जानकारी एवं सूचनाएं इत्यादि प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त विश्व में लगभग सभी टीवी चैनलों पर धारावाहिकों का प्रचलन भी देखने को मिलता है । यह धारावाहिक जहां लोगों या दर्शकों को विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान करने का कार्य करते हैं वही यह हमारा भरपूर मनोरंजन भी करते हैं। वास्तव में धारावाहिकों का प्रारंभ दर्शकों को सूचना प्रदान करने एवं मनोरंजन करने हेतु ही हुआ। 1983 में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक "हम लोग" से भारतीय टीवी पर भी धारावाहिकों का प्रचलन शुरू हुआ । सैटेलाइट टीवी चैनलों के आगमन के पश्चात बुलंदियों पर पहुंचा। डीमासीफिकेशन के उपरोक्त विभिन्न प्रकार के दर्शकों के मनोरंजन हेतु अलग-अलग टेलीविजन चैनल अस्तित्व में आए। जिसमें अलग-अलग विधाओं के टीवी धारावाहिक देखने को मिले। यह शोध पत्र माध्यमिक टेलीविजन पर प्रसारित किए गए ऐतिहासिक धारावाहिकों का अध्ययन बताता है।वस्तुनिष्ठ शोध पद्धति के माध्यम से भारतीय टेलीविजन पर प्रसारित ऐतिहासिक धारावाहिकों के स्वरूप एक प्रमुख पहचान के संबंध में इस पत्र में चर्चा की गई है ।

बीजक शब्द: सेटेलाइट टेलीविजन , डीमासीफिकेशन, माध्यमिक टेलीविजन, ऐतिहासिक धारावाहिक

परिचय:

वर्तमान समय में तकनीकी विकास और आधुनिकता ने बड़े -बूढ़े से लेकर बच्चे -बच्चे के हाथ में आज मोबाइल फोन आना आम बात है । रेडियो ,टेलीविजन ,सिनेमा ,इंटरनेट सहित सभी सुविधाओं से लेस इंफोटेनमेंट पर खरा उतरते हुए एक छोटे से स्मार्टफोन ने अमीर हो या गरीब हर तबके के लोगों के जीवन में बदलाव कर दिया है। वहीं अगर "पुराने समय" की बात की जाए- तो वह दौर था जब गांव ,कस्बे और शहरों की में लोक -माध्यमों एवं पारंपरिक कलाओं का उपयोग मनोरंजन के लिए किया जाता था। उस समय आम व्यक्ति टीवी और फोन से कोसों दूर था। तीज- त्योहारों पर गली-गली में कीर्तन, भजन नृत्य होते थे कभी-कभी रामलीला, रासलीला के जरिए भक्ति -भावना और धार्मिक उत्साह से भरे कलाकार भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन संबंधी पहलुओं को पर्दे पर लघु -नाटक के माध्यम से दर्शाते थे। वहीं अगर जनता जागरूकता की बात हो तो नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए जाते थे। जैसे -जैसे समय के साथ तकनीकी विकास हुए देश में रेडियो और टीवी का आगमन होने से समय की रफ्तार के साथ जनता के मनोरंजन के माध्यमों में भी

काफी बदलाव आए। अगर हम बात करें टेलीविजन सॉप ओपेरा की - यह महत्वता उन लोगों के लिए प्रस्तुत किए जाते थे जो घर वापस जाते थे। टेलीविजन धारावाहिक एक ऐसी नाटकीय कहानी है जिसे किश्तों में बांटा गया है और उन किश्तों को दैनिक और साप्ताहिक और किसी अन्य क्रम में टेलीविजन पर एक-एक करके प्रस्तुत किया जाता है । इन्हें अंग्रेजी और कई अन्य भाषाओं में सोप ओपेरा कहा जाता है क्योंकि इस तरह के धारावाहिकों को शुरू में प्रॉक्टर एंड गैंबल जैसे साबुन के कारण बनाया गया था । बाद में जैसे-जैसे इनका प्रचलन बढ़ता गया और टेलीविजन चैनलों की तादाद बढ़ती गई उसी प्रकार से इनमें भी "विविधता" आती गई। 'सेटेलाइट टेलीविजन चैनल' के आने के बाद डिमैसिफिकेशन हुआ और डिमैसिफिकेशन के अंतर्गत अलग-अलग प्रकार के दृश्य वर्गों के लिए अलग-अलग प्रकार के सीरियल बनने शुरू हुए। अगर हम ऐतिहासिक टेलिविजन सीरीज की बात करें तो ज्यादातर सीरियल सेटेलाइट टेलीविजन के आगमन के दौर के बाद दिखाई दिए।

भारत में टेलीविजन का विकास क्रम:

दिल्ली में 15 सितंबर 1959 को पहली बार टेलीविजन की शुरुआत हुई। वहीं 1972 में भारत का दूसरा टेलीविजन स्टेशन आज के मुंबई में खोला गया, उसके बाद अमृतसर और श्रीनगर (1973 में) और मद्रास, कलकत्ता और लखनऊ (1975 में) में स्टेशन खोले गए। महान वैज्ञानिक विक्रम साराभाई ने अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा के साथ मिलकर सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट (SITE) के लिए आधार तैयार किया। जिसे 1975 में लॉन्च किया गया था। भारत और अमेरिका के बीच, स्पेस साइंस के क्षेत्र में पहली बड़ी साझेदारी थी। यह भारतीय टेलीविजन के इतिहास का सबसे निर्णायक मोड़ था। इस प्रयोग का मकसद टीवी को गांवों तक पहुंचाना था। इस सैटेलाइट में नौ मीटर का एंटीना लगा था, जो अंतरिक्ष में एक छाते की तरह खुला था। सैटेलाइट भले ही विदेशी हो, लेकिन डायरेक्ट रिसेप्शन इक्विपमेंट, टीवी सेट और कार्यक्रमों को सैटेलाइट तक अपलिंक करने के लिए अर्थ स्टेशन को भारत में बनाया और डिजाइन किया गया था। इसी कांसेप्ट को ध्यान में रखते हुए, खेड़ा कम्युनिकेशंस प्रोजेक्ट को SITE के तहत एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शुरू किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीविजन प्रसारण के लिए सबसे पहले खेड़ा जिले के सुदूरवर्ती गांव पिज को चुना गया। पिज गांव में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा दिए गए लो पावर ट्रांसमीटर और एक प्रोडक्शन स्टूडियो को स्थापित किया गया। जबकि, अहमदाबाद के स्पेस एप्लिकेशन सेंटर (SAC) में एक सैटेलाइट अर्थ स्टेशन को स्थापित किया गया। परियोजना के तहत, 35 किलोमीटर के दायरे में 400 गांवों में 651 टीवी सेट वितरित किए गए थे। जुलाई 1975 को पहली बार सैकड़ों ग्रामीणों के सामने खुले मैदान में पहला प्रसारण किया गया। इसमें स्थानीय भाषा में लोगों से जुड़े मुद्दों की चर्चा हो रही थी। यह देख ग्रामीण हैरान थे और उनके लिए यह किसी जादू से कम नहीं था। भारत मे रंगीन कार्यक्रमों का प्रसारण श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा 15 अगस्त 1982 के लाल किला के स्पीच के साथ ही शुरू हो गया था 1983 में सरकार ने टीवी कार्यक्रमों के वृहद स्तर के विस्तार के लिए 'दूरदर्शन' को स्वीकृति दे दी। जिसके तहत टीवी ट्रांसमीटर की संख्या में भारी वृद्धि हुई। 1997 में प्रसार भारती की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत दूरदर्शन और आकाशवाणी दोनों विभाग आते हैं। आज दूरदर्शन के अंतर्गत 30 से भी ज्यादा चैनल आते हैं। लोकसभा चैनल भी इसी के अंतर्गत आता है। ज्ञानदर्शन दूरदर्शन का एक शैक्षिक चैनल है। CNN (अमेरिकी समाचार न्यूज़ एजेंसी) द्वारा वर्ष 1990 में खाड़ी युद्ध के समय, उसके द्वारा किये गए प्रसारण ने टीवी के लिए मार्ग और साफ कर दिया। हांगकांग आधारित STAR(सैटेलाइट टेलेविज़न एशियन रीजन, स्टार) ने भारतीय कंपनी से अनुबंध करके जी टीवी को जन्म दिया। जी टीवी निजी स्वामित्व का पहला हिंदी उपग्रह बना। कंपनी के बीच जब समझौता टूटा तो वे स्टार और जी दो अलग-अलग चैनल के रूप में सामने आए। 1995 में सर्वोच्च न्यायालय का आदेश आया कि "वायु तरंगों पर भारत सरकार का एकाधिकार नहीं हो सकता है।" ऐसे में क्षेत्रीय चैनलों का विकास भी बहुत ही तेजी से हुआ जिसके अंतर्गत सनटीवी(तमिल), एशियानेट(मलयालम) आदि चैनल सामने आए। वर्तमान समय में भारत मे लगभग 1028 रजिस्टर्ड सैटलाइट चैनल हैं, जिनकी संख्या सरकार के फैसले के अनुसार घटती और बढ़ती रहती है

उद्देश्य:

- भारत में टेलीविजन के विकास क्रम को जानना।
- भारत में टेलीविजन ऐतिहासिक धारावाहिकों का अध्ययन करना।
- भारत में टेलीविजन ऐतिहासिक धारावाहिकों के विषय वस्तु का अध्ययन।

शोध पद्धति:

इस शोध कार्य हेतु वस्तुनिष्ठ अध्ययन शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है जिसके अंतर्गत भारत के विभिन्न टेलीविजन चैनल पर प्रसारित किए गए अथवा प्रसारित किए जा रहे ऐतिहासिक धारावाहिकों के विषय वस्तु का अध्ययन किया गया है क्योंकि यह एक लघु शोध कार्य है इसलिए वस्तुनिष्ठ अध्ययन को अधिक विस्तृत स्वरूप प्रदान नहीं किया गया है ।

भारतीय टेलीविजन पर ऐतिहासिक टेलीविजन श्रृंखला का अध्ययन:

किसी टेलीविजन कार्यक्रम के सीमित संख्याओं के प्रकरणों को एक मिनीसीरीज़ (लघुश्रृंखला) या सीरियल (धारावाहिक) या सीमित श्रृंखला कहा जा सकता है। एक टेलीविजन श्रृंखला आमतौर पर एपिसोड में जारी की जाती है जो एक कथा का पालन करती है और आमतौर पर सीज़न में विभाजित होती है । 1980 के दशक से पहले, शो (सोप ओपेरा- प्रकार के धारावाहिकों को छोड़कर) आमतौर पर कहानी के आर्क के बिना स्थिर रहते थे , और मुख्य पात्र और आधार थोड़ा बदल जाते थे। यदि एपिसोड के दौरान पात्रों के जीवन में कुछ परिवर्तन हुआ , तो यह आमतौर पर अंत तक पूर्ववत हो गया था। इस वजह से, एपिसोड को किसी भी क्रम में प्रसारित किया जा सकता था। ऐतिहासिक श्रृंखलाएं प्रसारित होती रही है कभी हिंदू पृष्ठभूमि वाली कभी मोंडम पृष्ठभूमि वाले सीरियल प्रसारित होते रहे हैं ।

अब चर्चा करते हैं टेलीविजन पर ऐतिहासिक श्रृंखला के मुख्य धारावाहिकों पर:

क्रांति (1857) :- एक भारतीय ऐतिहासिक ड्रामा टेलिविजन श्रृंखला है। इसका निर्देशन संजय खान ने किया। इसका निर्माण न्यूमैरो ऊनो इंटरनेशनल लिमिटेड द्वारा किया गया। (1857 क्रांति)स्वतंत्रता के पहले संग्राम की गाथा से संबंधित है। इसमें 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुए विद्रोह की कहानी को प्रस्तुत किया गया है। यह 2002 से 2003 तक दूरदर्शन नेशनल चैनल पर प्रसारित हुआ। इसके मुख्य किरदार "(एसएम ज़हीर), (माया अलगो] ,(ललित तिवारी), (भूपेन्द्र सिंह) ,और बरखा मदनी ने निभाया यह सीरियल भारतीय विद्रोह अंग्रेजो के खिलाफ बगावत पर आधारित है।

21 सरफरोश -सारागढ़ी (1897):- सरफरोश - सारागढ़ी 1897 एक भारतीय ऐतिहासिक ड्रामा टेलीविजन श्रृंखला है जिसमें मोहित रैना, प्रखर शुक्ला और मुकुल देव ने अभिनय किया है।

यह शो सारागढ़ी की लड़ाई पर आधारित है, जो ब्रिटिश भारतीय सेना के सिख सैनिकों और पश्तून ओरकजई आदिवासियों के बीच लड़ी गई थी। कॉन्टिलो एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित, यह डिस्कवरी जीत पर 12 फरवरी से 11 मई 2018 तक चला।

श्रृंखला ओरकज़ैस और 36 सिख रेजिमेंट के बीच अंतिम लड़ाई तक की घटनाओं का एक काल्पनिक चित्रण प्रस्तुत करती है।

राज आचार्य और प्रशांत सिंह द्वारा निर्देशित किया गया था।आज यह नेटफ्लिक्स पर भी उपलब्ध है।21 सरफरोश: सारागढ़ी 1897 ने 10 में से 8.6 अंकों की द्वि घातुमान रेटिंग प्राप्त की और यह बॉलीवुड, नाटक और अन्य शैलियों में देखने के लिए एक शानदार शो है।

भरत एक खोज (1988):- नाटक का निर्देशन, लेखन और निर्माण श्याम बेनेगल ने सिनेमैटोग्राफर वी के मूर्ति के साथ 1988 में राज्य के स्वामित्व वाले दूरदर्शन के लिए किया था। शमा जैदी ने पटकथा का सह-लेखन किया।यह डीडी नेशनल पर (13 नवंबर 1988 से 12 नवंबर 1999) 53 एपिसोडतक प्रसारित हुआ। श्रृंखला की अवधारणा जवाहरलाल नेहरू की द डिस्कवरी ऑफ इंडिया नामक पुस्तक से की गई है। यह पुस्तक वर्ष 1946 में सामने आई, और इसने उन हज़ार वर्षों के इतिहास के बारे में बात की जो अंततः 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले भारत के पीछे पड़े थेहालांकि वास्तविक कहानी काफी लंबी थी, श्याम बेनेगल ने पुस्तक की पूरी कहानी का एक अंश तैंतालीस एपिसोड में फिट करने के लिए तैयार किया। कहानी लिखने वाले श्याम बेनेगल ने श्रृंखला के निर्देशन और निर्माण को भी देखा। पूरी श्रृंखला वर्ष 1988 में दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर रिलीज़ हुई। शो के कलाकारों और चालक दल को उत्सुकता से चुना गया था, और इस टेलीविजन श्रृंखला की शूटिंग के लिए कुल एक सौ चौवालीस सेट बनाए गए थे। श्रृंखला की कहानी क्रमिक रूप से एक एपिसोड से दूसरे एपिसोड में प्रवाहित हुई। पहले एपिसोड ने भारत में जीवन की शुरुआत का प्रदर्शन किया। इसकी शुरुआत सिंधु घाटी सभ्यता के चित्रण के साथ हुई, इसके बाद वैदिक युग का आगमन हुआ। इसके बाद एक दो एपिसोड में महाभारत और रामायण की भव्य कथाएं दिखाई गईं। आखिरकार, चंद्रगुप्त और चाणक्य वे थे जिन पर एपिसोड आधारित थे।

अम्रपाली:- आम्रपाली 2002 में रवि खेमू द्वारा निर्देशित एक भारतीय ऐतिहासिक ड्रामा टीवी धारावाहिक था। यह लगभग 600 ईसा पूर्व की दुनिया को दर्शाने वाली एक बड़े बजट की कहानी थी। यह धारावाहिक दूरदर्शन राष्ट्रीय नेटवर्क पर हर रविवार को सुबह 11 बजे प्रसारित किया जाता था, जो 30 जून 2002 से शुरू होता है

आम्रपाली प्राचीन वैशाली में स्थापित है। यह एक खूबसूरत, मासूम लड़की, आम्रपाली के एक परिपक्व वयस्क में अचानक परिवर्तन की कहानी बताती है।

अपने माता-पिता द्वारा परित्यक्त, आम्रपाली को महानमन द्वारा एक आम के पेड़ के नीचे एक शिशु के रूप में पाया गया था। वह उसे वैशाली के बाहरी इलाके में एक गाँव में ले गया, जहाँ वह बड़ी हुई और उसे हर्ष नाम के एक व्यक्ति से प्यार हो गया। वैशाली की नई जनपथ कल्याणी का ताज पहनाने के लिए हर सात साल में आयोजित होने वाले फाल्गुनी उत्सव को देखने के लिए वह

उत्सुकता से वैशाली जाती है। यह उपाधि हर सात साल में राज्य की सबसे खूबसूरत और प्रतिभाशाली महिला को दी जाती है, जो तब अपनी पसंद के पुरुषों का मनोरंजन कर सकती है। आम्रपाली के उत्सव में आने से उसकी जिंदगी की दिशा बदल जाती है। घटनाओं के एक नाटकीय मोड़ में, वह नशे में धुत हो जाती है और जनपथ कल्याणी बनने के लिए संघर्ष करने वाली सुंदरियों के समूह में शामिल हो जाती है। बाद में वह महिलाओं के उत्थान के लिए काम करती हैं और जनपथ कल्याणी की प्रथा को समाप्त करने के लिए लड़ाई लड़ती हैं।

भारत के बहादुर पुत्र-{महाराणा प्रताप}:-यह 27 मई 2013 से 10 दिसंबर 2015 तक सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर प्रसारित होने वाला टीवी सीरियल है।

इसे अभिमन्यु राज सिंह ने निर्देशित किया है। यह धारावाहिक १६वीं शताब्दी के मेवाड़ के राजपूत शासक, महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित एक भारतीय ऐतिहासिक नाटक है। एक भारतीय ऐतिहासिक कथा है, जो कॉन्टिलो एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित है। यह मेवाड़ साम्राज्य के सोलहवीं शताब्दी के शासक महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित हैराजकुमार प्रताप छोटी उम्र से ही एक सच्चे देशभक्त हैं, जो अपने पूर्वजों की तरह एक महान योद्धा हैं और अपनी भूमि को अपनी मां मानते हैं। वह अपनी मां जयवंताबाई और अपने गुरु राघवेंद्र के सिद्धांतों और बातों का पालन करते हैं। प्रताप अपने पिता का जीवन है। यह भी दिखाया गया है कि कैसे प्रताप की सौतेली माँ रानी धीरबाई भटियानी अपने बेटे जगमल को उदय सिंह का कानूनी वारिस बनाने के लिए उसके खिलाफ कई योजनाएँ बनाती हैं। प्रताप का अपनी पहली पत्नी अजबदे पंवार के प्रति प्यार और शादी से पहले और बाद में उनके रिश्ते को भी शो में दिखाया गया है। वह एक वफादार बेटा, देखभाल करने वाला भाई, भरोसेमंद प्रेमी, प्यार करने वाला पति, एक अच्छा पिता, कुलीन राजा, महान योद्धा और सच्चा देशभक्त था!

झांसी की रानी:- यह शो 11 फरवरी 2019 को कलर्स टीवी पर प्रसारित हुआ।

इसका निर्देशन जितेंद्र श्रीवास्तव ने किया। इसका मेन किरदार अनुष्का सेन ने निभाया। कम टीआरपी के कारण शो 12 जुलाई 2019 को 110 एपिसोड पूरे करके समाप्त हुआ। इसकी जगह बहू बेगम ने ले ली। यह शो रानी लक्ष्मीबाई बनने वाली एक महिला योद्धा मणिकर्णिका के जीवन को दर्शाता है।

इसकी पटकथा की बात करें कहानी शुरू होती है मणिकर्णिका से ब्रिटिश झंडा चुराने और अपने देश का झंडा फहराने से। इससे अंग्रेज नाराज हो जाते हैं और वे उस व्यक्ति की तलाश करते हैं जिसने उनका झंडा जलाया था। अपनी यात्रा के हिस्से के रूप में, मनु झांसी के राजा गंगाधर राव से शादी करती है, जिससे उसे झांसी के साथ-साथ शेष भारत के लिए स्वतंत्रता के लिए लड़ने की शक्ति मिलती है। वह झांसी की रानी बन जाती है, जो सबसे प्रचुर राज्यों में से एक है, लेकिन अभी तक ब्रिटिश शासन से मुक्त नहीं हुई है। वह महिलाओं के लिए पारंपरिक भूमिकाओं के प्रतिबंधों के बावजूद झांसी और ब्रिटिश शासन के दोनों गद्दारों से लड़ती है।

जोधा अकबर :- जोधा अकबर एक भारतीय काल्पनिक ड्रामा रोमांटिक टेलीविजन श्रृंखला है जो 18 जून 2013 से 7 अगस्त 2015 तक ज़ी टीवी पर प्रसारित हुई और डिजिटल रूप से ज़ी5 पर भी उपलब्ध है। शो का निर्माण बालाजी टेलीफिल्म्स के तहत एकता कपूर ने किया था। रजत टोकस और परिधि शर्मा अभिनीत, यह कलाकारों के प्रदर्शन के लिए प्रशंसा के साथ साथ एक सफल शो था।

जोधा अकबर एक महाकाव्य नाटक है जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे विवाह नीति जोधा बाई और अकबर के प्यार को एक माप में लाती है जिसने भारत की नियति को बदल दिया है। यह नाटक काल इस समय के युद्धों और मुगलों और राजपूतों के बीच संबंधों और जोधा और अकबर को एक साथ रहने के लिए परीक्षणों और क्लेशों का सामना करने का भी वर्णन करता है। नाटक संचालन रानियों, दरबारों, दरबारियों, मंत्रियों और अकबर और जोधा बाई की प्रेम कहानी पर उनके प्रभाव पर भी केंद्रित है। अंत में, शो में यह भी दिखाया गया है कि कैसे मुगल सम्राट जलालुद्दीन मुहम्मद ने भारत के लोगों से 'अकबर' की उपाधि प्राप्त की। एक निडर योद्धा जलालुद्दीन मोहम्मद, सम्राट हुमायूँ और हमीदा बानो बेगम के पुत्र, बहुत कम उम्र में मुगल वंश के सम्राट बन गए। वह बैरम खान, उनके अभिकर्मक और महम अंगा, उनकी पालक मां के प्रभाव में है। बैरम खाँ ने जलाल को निर्दयी और क्रूर शासक बनना सिखाया है, और भय से अपना शासन फैलाया है, लोगों को तलवार से जीत लिया है। जलाल, बैरम खान के आदर्शों का पालन करते हुए एक हृदयहीन और भयानक शासक बन जाता है, जिसे लोग नापसंद करते हैं। वह पूरे हिंदुस्तान को जीतना चाहता है, और वर्तमान में उसकी नजर सुनहरे राजपुताना पर है।आमेर की राजकुमारी जोधा बाई, राजा भारमल और रानी मैनावती की बेटी, एक दयालु और बुद्धिमान युवा लड़की है, जो लोगों के दिलों पर राज करने में विश्वास करती है और वह नियम प्रेम और एकजुटता से फैलता है

जोधा अकबर एक महाकाव्य काल का नाटक है जो मुगल सम्राटों के समय तक खींचेगा। जोधा और अकबर की ऐतिहासिक और शाश्वत प्रेम कहानी को खूबसूरती से चित्रित किया गया है। शुरुआत में, जोधा अकबर से नफरत करता है और उससे जबरदस्ती शादी कर लेता है। लेकिन धीरे-धीरे कई मौकों के बाद वह गहरे प्यार में पड़ जाती है।

युग:- युग एक भारतीय हिंदी भाषा की टेलीविजन श्रृंखला है जिसे सितंबर 1996 से नवंबर 1997 तक डीडी नेशनल पर प्रसारित किया गया था

युग एक हिंदी भाषा की टेलीविजन श्रृंखला थी जिसे दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया था।श्रृंखला में हेमा मालिनी, असरानी, दीपक पाराशर, शिखा स्वरूप, जावेद खान, मुकेश खन्ना, पंकज धीर, नीना गुप्ता, प्रिया तेंदुलकर, अश्विनी भावे और कई अन्य बॉलीवुड सितारों जैसे प्रभावशाली कलाकार थे। इसका प्रसारण डीडी नेशनल पर 1996 से 1998 तक किया गया था कहानी भारत में ब्रिटिश शासन से सुनाई गई है और कुछ स्वतंत्रता सेनानियों की कहानी है। बाद में, टीवी श्रृंखला ने '1961 ऑपरेशन विजय' पर भी ध्यान केंद्रित किया था। इस श्रृंखला में, हेमा मालिनी ने निर्मला के रूप में चरित्र का प्रदर्शन किया और उनकी बहन अश्विनी भावे ने रुक्मणी की भूमिका निभाई, जो स्वतंत्र भारत के लिए दृष्टि का समर्थन करती है। सबसे बड़ी समस्या उनके पिता हैं जो अंग्रेजों के नौकर हैं। निर्मला महात्मा गांधी की प्रिय हैं और रुक्मणी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की समर्थक हैं। दोनों बहनें सही तरीके से लक्ष्य तक पहुँचने लगती हैं।

इस सीरीज में आजादी के बाद के एक ऐसे युग की भी झलक दिखाई गई जहां हमारे समाज की मुख्य धारा पर इच्छा, स्वार्थ और अपराध हावी हो गए हैं। कमलेश्वर ने श्रृंखला लिखी, और 'युग' के मुख्य पात्रों में विंदू दारा सिंह, शाहबाज खान, सुदेश बेरी, विनोद कपूर और अन्य जैसे छोटे पर्दे के सभी भरोसेमंद शीर्ष कलाकार शामिल थे। श्रृंखला में कुल 260-एपिसोड थे जो दूरदर्शन चैनल पर सोमवार से शुक्रवार दोपहर 3.30 बजे प्रसारित हुए

निष्कर्ष:

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारत में ऐतिहासिक टेलीविजन कार्यक्रमों श्रृंखलाओं में काफी विविधता पाई गई है।अगर हम बात करें 1857 की क्रांति के कार्यक्रम की तो इसके बाद भी ऐसे अन्य काफी कार्यक्रम प्रस्तुत होते रहे हैं।भारत के ऊपर लगभग 800 साल से जो मुसलमान हुकुमनातो ने हुकूमत की उनसे संबंधित भी ऐतिहासिक टीवी श्रृंखलाएं भी प्रस्तुत होते रही है।

इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले अधिकतर ऐतिहासिक धारावाहिकों का प्रसारण दूरदर्शन पर किया गया हालांकि इसके पश्चात सोनी ,कलर्स, जी -टीवी इत्यादि सेटेलाइट टेलीविजन चैनल पर बीच ऐतिहासिक धारावाहिक का प्रसारण होता रहा है। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि जोधा अकबर इन ऐतिहासिक धारावाहिकों में से सबसे अधिक चलने वाला कुशलपूर्वक सबसे मनपसंद दर्शकों का धारावाहिक रहा है । इसके अतिरिक्त दूसरे धारावाहिक भारत एक खोज एवं युग भी अपने वस्तुनिष्ठता के चलते दर्शकों में अलग पेंट बनाने में कामयाब रहे। क्रांति (1857) भले ही एक उत्कृष्ट धारावाहिक था लेकिन इसको दर्शकों की ज्यादा रेटिंग नसीब नहीं हुई। इसी तरह (21 सरफरोशी सारागढ़ी) 1897 भी मात्र 3 महीने तक ही चल पाया। आम्रपाली ऐतिहासिक ड्रामा टीवी धारावाहिक था लेकिन इसे भी दर्शकों के बीच ज्यादा जगह बनाने में मुश्किलात पेश आई। कलर्स पर प्रसारित (झांसी की रानी) धारावाहिक भी कम टीआरपी के चलते 110 एपिसोड पूरे करने के पश्चात समाप्त करना पड़ा ।

कुल मिलाकर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ऐतिहासिक धारावाहिकों का निर्माण करना जितना मुश्किल कार्य है इससे अधिक मुश्किलात कार्य वर्तमान में इस प्रकार के धारावाहिकों को दर्शकों की स्वीकृति दिलवाना तथा उन्हें टीआरपी पर बनाए रखना है । फिर भी उम्मीद की जाती है कि अलग-अलग टेलीविजन चैनलों पर भारत के गौरवमई इतिहास का प्रस्तुतीकरण धारावाहिकों के माध्यम से ही होता रहेगा ।

संदर्भ सूची :-

- https://en.wikipedia.org/wiki/Yug_(TV_series)
- https://www.flexiprep.com/NIOS-Notes/Senior-Secondary/Mass-Communication/NIOS-Class-12-Mass-Communication-Ch-13-Television-in-India.html

- https://www.zee5.com/tv-shows/details/jhansi-ki-rani/0-6-124
- https://en.m.wikipedia.org/wiki/List_of_television_shows_based_on_Indian_history
- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Amrapali_(TV_series)
- Keval J. kumar [5th edition] Mass communication in India Jaico publishing house, JA-1 Jash chambers, Off sir Phirozshah Mehtra Road Mumbai,Maharastra.